सत्य साहित्य

वर्ष 3 / अंक 1
अक्तूबर 2019
Year 3/ No. 1
October
2019

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

श्री राम तुम्हारे मन्दिर में,
मैं दीप जलाने आया हूं ।।
नीरस सूने जीवन में,
मन के अन्धेरे कोने में।
सांसों की उजली आशामयी,
शुभ ज्योति जगाने आया हूं ।।1।।
पूजन विधि विधान नहीं,
और विमान साधन ध्यान नहीं।
पर श्रद्धा भक्ति सुगन्धि भरे,
दो पुष्प चढ़ाने आया हूं ।।2।।
राग गीत का ज्ञान नहीं,
मुझे ताल सुरों का भान नहीं।
पर ढीली हृदय की तारों का
झंकार सुनाने आया हूं ।।3।।

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- श्रद्धाँजलि
- राम-जाप
- प्रथम दर्शन
- श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेंडर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

अवतरण दिवस

(2 अक्टूबर 1920)

प्यारे प्रेम महाराज जी,
पूरी करना आस जी।
रखना चरणां दे पास जी
करना बेड़ा पार जी॥

Happy Birthday
Premji Maharaj!

(विभिन्न केन्द्रों से बच्चों द्वारा गुरुजनों को श्रद्धा सुमन)

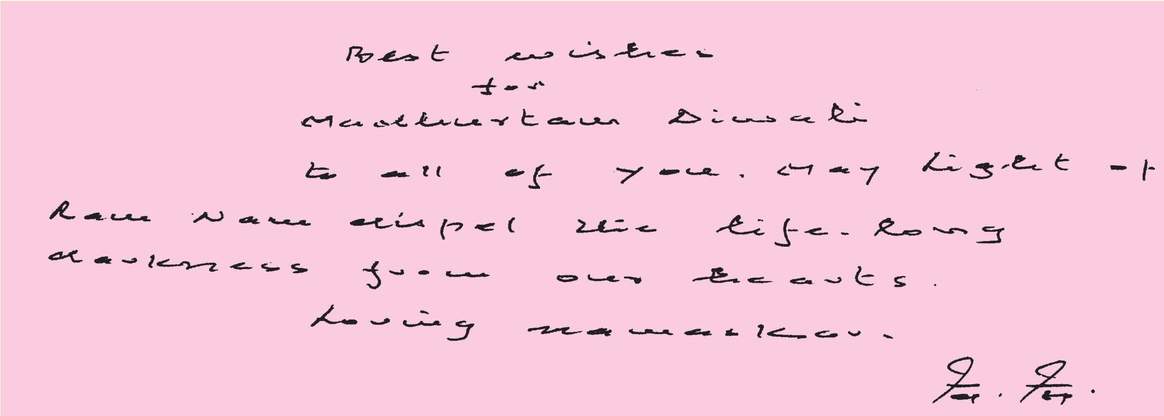

Best wishes
for
Madhurtam Diwali
to all of you. May light of
Ram Nam dispel the life-long
darkness from our hearts.
Loving namaskar.

जप योग : भूमिका

नाम–जाप पूज्य श्री स्वामी जी महाराज की उपासना–पद्धति का प्रमुख अंग है। श्री स्वामी जी महाराज दीक्षा देते समय ध्यान व जाप करने की विधि समझाते हैं। जाप बैठकर, चलते–फिरते, सोते–जगते, सैर करते हुए कर सकते हैं। माला अथवा बिना माला के भी जाप किया जा सकता है।

परमात्मा के मंगलमय पतित–पावन नाम, शब्द या मन्त्र को विधिपूर्वक मन से, वाणी से, बार–बार नाम के उच्चारण एवं नाम की रटन को जाप कहा जाता है। राम नाम का जाप बोल कर, कण्ठ से, मन से किया जा सकता है। मुख से बोल कर (बैखरी वाणी से) जाप करना दस गुणा फलदायक है, कण्ठ से अर्थात उपांशु जाप करना सौ गुणा फलदायक है, मानसिक जाप हज़ार गुणा फलदायक है। अतएव साधकों को मानसिक जाप करने का निरन्तर अभ्यास करना चाहिए।

पूज्यपाद स्वामी जी महाराज की उपासना पद्धति के प्रमुख अंग हैं विधिपूर्वक ध्यान एवं जाप। हम सब नाम के उपासक हैं, हम सब नाम के जापक हैं।

''जपात् सिद्धि, जपात् सिद्धि, जपात् सिद्धि''

– अर्थात जाप करने से सिद्धि प्राप्त होती है। संत तुलसीदास जी का कथन है, ''राम जप, राम जप, राम जप बावरे।''

पूज्य पाद स्वामी जी का कथन है–

''एक घड़ी आधी घड़ी आधी से भी आध।
राम नाम के जाप से कटे कोटि अपराध।।''

'जपो जी नित्य राम राम श्री राम।'

पूज्य श्री महाराज जी का कथन है –

''परमात्मा का सतत् स्मरण सबसे बड़ी सम्पत्ति है। उसका विस्मरण सब से बड़ी विपत्ति है।''

गीताचार्य भगवान श्री कृष्ण का कथन है –

''यज्ञों में मैं, जप यज्ञ हूँ''।

''भगवान का नाम स्मरण ही यज्ञ है।''

ध्यान में मानस जप किया जाता है। भाव से, प्रेम से, एकाग्र मन से नाम जाप करने से चित्त की शुद्धि होती है और ध्यान में लीनता लाभ होती है।

''जनम -जनम मुनि जतन कराहीं,
अन्त राम कह आवत् नाहीं।''

इसलिए राम नाम का सतत् जप का अभ्यास करने से अन्त समय में राम–स्मरण हो आता है।

''अन्तकाल जो जन जपे, जन्म जीत वह जाए।
वेदागम का मर्म है, समझो निश्चय लाए।।''

यह जप योग की महिमा है।

(एक वरिष्ठ साधक)

Jap - A Spiritual Austerity

सत्यानन्द

Performing *jap* is a spiritual austerity. The more it is done, the more the soul will be purified. *Jap* should be performed with great feeling and devotion. This will have a profound effect on the *sanskaras* (subtle impressions of past actions lying dormant in the subconscious mind). The spiritual aspirant will experience this himself. When automatic *ajapa jaap* starts, not audibly or with the tongue but effortlessly and ceaselessly in the mind then the knot of ignorance will be rent asunder and the soul ascends through the tenth gate. That is to say the spiritual aspirant attains supreme enlightenment.

People practice severe austerities to get established in *samadhi* (highest transcendental state). In mountain caves, cottage retreats, on the banks of the Ganges, they practice various kinds of spiritual disciplines. While that has its own merits but for us *Ram-Nam* is the sublime means. In some it induces *Yog-nidra* (effortless relaxation). *Jap-Nidra* (in which mantra chanting goes on even in sleep) is, in fact, a daily occurrence. *Jap* leads to spiritual perfection. Men and women ought to have this very strong conviction. By doing *jap* hardships end soon, fortune begins to change. Individuals must have recourse to some spiritual practice or the other i.e. one ought to spend maximum time in *Naam-jap.* Do not idle away your time.

One should not feel embarrassed about reciting *Ram-Nam* or singing its glories. When men and women are not embarrassed about going to the cinema or indulging in other sinful vices, then why feel embarrassed about counting beads of *Ram-Nam* rosary? The devotee is delivered by counting beads of *Ram-Nam* rosary. This rosary is a great repository of knowledge. It abides forever. If it is with is us, there is no need for other friends or companions. It is our companion here and hereafter. One should cheerfully count one's beads. When once one has given one's heart to the Lord, then whatever anyone says, one should not be diffident about one's devotions. In this regard one should be apathetic towards one's own family as well. This purifies the consciousness. Those who are not concerned about the world and are attached only to Ram are sure to find Him. Making a habit of doing a certain amount of jaap everyday is very beneficial. Ram-Nam wealth will perpetually accrue. Loss is out of the question and neither can it be spent. If one becomes passionate about amassing *Ram-Nam* wealth, this greed takes one to the sanctuary of Shri Ram's lotus feet. It confers liberation.

The spiritual aspirants's fingers dance on the beads of the rosary. The devotee's ears should dance listening to the glories of God, tongue should dance singing His glories and his mind and fingers should incessantly count the beads of *Ram-Nam* rosary. Those who repeat *Ram-Nam* conquer even death. This is the highest and noblest sentiment. Ram's devotee never perishes. Even if his time is up and he casts off the body. Fearlessness, braveness is required, then one will reap the benefits. Inner strength, strength of word keeps on increasing. This spiritual discipline (*jap*) is very beneficial. When *'Ram-Ram'* starts resounding within,

this is indeed the greatest achievement. Then what else remains to be achieved? When *'Ram-Ram'* starts resounding in the sanctum sanctorum of the spiritual aspirant's heart then he will surely be delivered. It is the steps of *Ram-Nam* which lead to the temple of Ram. We say with certainty that *Ram-Nam* is very powerful. Our mind should not waver. We should make our conviction resolute. People do not believe that repetition of *Ram-Nam* is nectarous so they lack faith. Faith should abound. Develop sweet love for Ram. Then nirvana (liberation) will be grovelling at your feet. He who repeats *Ram-Nam* will attain the abode of Ram. The divine light will shine perpetually within. Saturate yourself with the sound of *'Ram-Ram'*. So much so that it effortlessly gushes forth like a mountain spring.

Sadhna Satsang Delhi, Date : 7.4.1955, Time : 11 am
(Pravchan Piyush page 149-150)

राम नाम आराधन

प्रेम

परमेश्वर के नाम में पूरा भरोसा होना चाहिए। नाम जाप से कृपा अवतरित होती है। यह परमात्मा की देन है। यह पथ–प्रदर्शक बन कर अपने पथ पर ले चलेगा। जो जितना भी जाप करेगा थोड़ा ही है। नामी नाम में है। नाम में राम होते हैं। उसी की कृपा अवतरित होती है। अपने मार्ग पर ले जाती है। महाराज (स्वामी जी) के वाक्य हैं : ''राम सबके हृदय में रहता है। उसका आसन मानव हृदय में है।'' अर्जुन को कहा कि उसी की शरण में रहो। वही परम धाम में पहुँचाए। नाम का ही भरोसा है, नाम का ही सहारा है। जो किसी भी समय किसी के भी साथ हो सकता है, कहीं भी हों यह हमेशा है। साथ में रहने वाली वस्तु है अपने में कमी हो जाए तो और बात है, वरन् वह तो माँ–बाप की तरह बच्चे से प्यार करते हैं। कभी राम परीक्षा नहीं लेते। साधक का कर्तव्य है कि हर समय उसी को अपना माँ–बाप समझे वही सच्चे माँ–बाप हैं, वही प्यारा है।

अगर संशय हो जाए तो अपना ही दुर्भाग्य है। सबसे उत्तम मंत्र व सर्वश्रेष्ठ– वह राम नाम का मंत्र है। इसके आराधन से सभी लाभ हो सकते हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि यह नाम हमें आसानी से प्राप्त हो गया है। भागीरथ गंगा को यहाँ लाए। महाराज जी जानते हैं कि वे नाम को कैसे लाए। कभी संशय नहीं आने देना। यही विश्वास होना चाहिए कि मैं राम की शरण में हूँ। उसी के दरबार में हूँ जब आराधन करता हूँ, जब ध्यान करता हूँ तो माँ राम अपनी गोद में उठा लेती है। यदि कहीं और भटकना शुरु कर दें तो दुर्भाग्य है। कोई जरुरी नहीं कि कृपा के लिए बाहर जाना पड़ता है। कृपा अवश्य होगी यह विश्वास होना चाहिए। उसी की शक्ति मुझे जगा रही है और उसी का हाथ मेरे सिर पर है।

श्री राम तेरी कृपा सब पर हो।

(परम पूजनीय श्री प्रेम महाराज के श्री मुख से, हरिद्वार 30 जून 1966 - परम पूजनीय श्री महाराज की डॉयरी से)

राम नाम का जाप

विश्वामित्र

नाम जपो, नाम जपो, नाम जपो .....

राम ही हमारा मन्त्र है। स्वामी जी महाराज ने इस मन्त्र को छुपाया नहीं। सब से डट के कहिएगा,'' हम राम राम जपते हैं''। एक मन्त्र जो गरीब भी जप सकता है, अनपढ़ भी जप सकता है, विद्वान भी जप सकता है, शराबी भी जप सकता है, माँस खाने वाला भी जप सकता है, पापी भी जप सकता है और पुण्यात्मा भी जप सकता है। महिला भी जप सकती है, पुरुष भी। बालक भी जप सकता है और वृद्ध भी। नीची, ऊँची जाति वाले सब जप सकते हैं। देशी भी जपे और विदेशी भी। व्यापारी भी जप सकता है, मज़दूर भी, किसान भी एवं कर्मचारी भी। घर का नौकर भी और मालिक भी। हर समय जपा जा सकता है राम नाम। हर जगह भी जपा जा सकता है, कामकाज करते भी जपा जा सकता है यह नाम।

राम नाम कैसे जपा जाता है ? राम नाम पर ध्यान किस प्रकार से लगाया जाता है ? इस विधि को ही दीक्षा कहा जाता है। स्वामी जी महाराज उसके बाद वायदा लेते हैं कि राम नाम जपते रहिएगा। स्वामी जी महाराज की साधना ही यही है– ''मुख से जपिए राम और हाथ से करिए काम।''

आप सब जाप कर रहे हैं। देख कर बहुत अच्छा लग रहा है। सबके हाथ में माला है। कोई बहुत जल्दी–जल्दी राम–राम जप रहे होंगे कोई धीरे–धीरे जप रहे होंगे, सब का अपना अपना ढंग है बहरहाल जप तो सब कर रहे हैं। कुछ एक बातें इस जप के साथ युक्त कर लोगे तो इस जाप का लाभ आपको अनन्त गुणा मिलने लगेगा। एक जो हर कोई कहता है, हर कोई जानता भी है, शायद करने में थोड़ी कठिनाई महसूस होती हो। हर साधक को करना चाहिए, जप भाव सहित कीजिए। यह क्या चीज़ है ? सब इसको बहुत अच्छी तरह जानते हैं सुन रखा है शब्द अनेक बार। लेकिन कितना इसको समझ कर, इस शब्द का सदुपयोग करते हैं, इस पर कई बार मुझे थोड़ा सन्देह होता है। भाव सहित जाप न किया जाए तो आप कहते हो इतनी महिमा गाई है राम नाम की शास्त्रों में वह हमारे जीवन में उतरी तो नहीं है, वह हमें दिखाई तो नहीं देती। किसी भी ढंग से राम–राम जपा जाए तो व्यक्ति को शान्ति का अनुभव होना चाहिए, आनन्द की अनुभूति होनी चाहिए। राम नाम का माधुर्य महसूस होना चाहिए। शास्त्र कहता है it is like necter in a pill मुख में डालते ही स्वाद बदल जाता है। आप लोगों के मुख में तो रहता ही है। क्या कभी आप ने स्वाद चखा है ? कभी आपको स्वाद जैसा मीठा कहा जाता है कभी महसूस हुआ है क्या ? यदि ऐसा नहीं तो स्पष्ट है विषय गम्भीर है और सोचने योग्य है, कहाँ गलती हो रही है?

Currency note होता है 100 रुपए का नोट, 500 रुपए 1000 रुपए का–तीनों कागज़ हैं। तीनों की कीमत देखो तो आप बहुत अन्तर नहीं होगा। कागज़ की कीमत मुझे पता नहीं। लेकिन अगर यह कहा जाए कि 100 रुपए के नोट की कीमत 25 पैसे होगी तो 500 रुपए की ज्यादा से ज्यादा लगा लो 50 पैसे होगी। 1000 रुपए के नोट की ज्यादा से ज्यादा 75 पैसे होगी या एक रुपए लगा लो। लेकिन उसकी कीमत में तो बहुत फर्क पड़ गया। एक 100 रुपए का नोट है एक 500 रुपए का, एक 1000 रुपए का है। क्या हुआ है? संत–महात्मा कहते हैं सरकार की मोहर की कीमत। जप भाव सहित किया है या भाव रहित किया है यहीं अन्तर समझ लीजिए। कागज़ की कीमत में कोई बहुत अन्तर नहीं है लेकिन नोट की कीमत में कितने गुणा का अन्तर हो गया हुआ

है। सिर्फ सरकारी मोहर उस पर लग गई है। संत–महात्मा कहते हैं भाव सहित किया हुआ जप भी ऐसे ही मूल्यवान हो जाता है। क्या भाव होना चाहिए जिस वक्त हम जाप करते हैं?

परमेश्वर तू इतना अपना है तुझे भुलाया नहीं जा सकता है, तुम्हें याद कर रहे हैं। उसे याद करना हमारा कर्तव्य है इसीलिए याद कर रहे हैं। याद करने से क्या चाहिए ? चाहिए क्या होता है ? उसे याद करना जो इतना अपना है, कर्तव्य है इसीलिए उसे याद कर रहे हैं। परमेश्वर तेरी इतनी मेहरबानियाँ हैं हमारे ऊपर। जप करना मात्र तेरा धन्यवाद करने का ढ़ंग है। हम धन्यवाद कर रहे हैं तेरा। जिसको याद किया जाता है यदि वह तेरे जैसा है, जैसा सुना है तो वह अपने आपको ऋणी महसूस करता है। मेरे बच्चे कितने कृतज्ञ हैं मेरे प्रति, मुझे याद कर रहे हैं। तो वह अपने बच्चों के अनुकूल हो जाता है उसकी अनुकूलता जिन्दगी में बहुत आवश्यक है। सब कुछ अनुकूल हो और वह अनुकूल नहीं तो सब कुछ प्रतिकूल होगा। उसका अनुकूल होना बहुत जरुरी है। आप उसे प्रेमपूर्वक याद कर रहे हो तो वह परमात्मा आपके अनुकूल हुए बिना रह नहीं सकता। मुझ जैसे को कितना आप याद करते हो। उसकी मान्यता इस प्रकार की है। मुझ जैसे को याद कर रहे हैं मैं इनके लिए जितना भी करुँ वह कम है। ध्वनि की प्रतिध्वनि। आपकी ध्वनि उस तक पहुँचती है तो उसकी प्रतिध्वनि न हो ऐसा हो नहीं सकता। इस विश्वास से जाप कीजिएगा। आपके जप में प्रेम होना चाहिए, आपके जप में विश्वास होना चाहिए। आपके जप में श्रद्धा होनी चाहिए और आपके जप में निष्कामता होनी चाहिए। क्या चाहिए ? जो पहले दिया है वह क्या कम है ? और क्या चाहिए? तू है न बस पर्याप्त है और क्या चाहिए। तू है तो सब कुछ है। हे राम! तू मेरी हर आवश्यकता के लिए पर्याप्त है। मुझे और किसी चीज़ की जरुरत नहीं। तू है तो सब कुछ है और यदि तू नहीं तो फिर कुछ भी नहीं। परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए जाप कर रहा हूं। परमेश्वर प्रसन्न रहें इसलिए उन्हें याद कर रहा हूँ। कहाँ कमाई लुटती है हमारी ? जाप भी करते हैं सत्संगों में भी जाते हैं उसके बावजूद भी महसूस होता है– अभी भौतिक कामनाएँ वैसी की वैसी बनी हुई हैं, उनसे छुटकारा नहीं है। कुछ न कुछ हमारी चाहतें परमात्मा के प्रति बनी रहती हैं। कभी अपनी समस्याएँ हैं और तो कभी अपनों की समस्याएँ हैं। पीछा नहीं छोड़ती, ये कामनाओं के रुप में आती हैं। कबीर साहब इसी बात को बहुत सुन्दर ढ़ंग से कहते हैं। जब किसी ने पूछा,''आप भी वही राम–नाम जपते हो जो हम। हमारा राम–नाम तो हमारे ही काम नहीं आता और आपका राम नाम सारे संसार के काम आता है। क्या ये राम नाम दो अलग–अलग हैं ?'' कबीर साहब ने कहा,''नहीं! जो मैं जपता हूँ वही आप भी जपते हो। अन्तर क्या है?''

कबीर साहब एक दृष्टांत देकर समझाते हैं– एक किसान बीज बोता है पहले भूमि तैयार करता है जैसे हम अन्तःकरण रुपी भूमि को पहले तैयार करते हैं। उसके बाद तो सत्कर्म रुपी बीज बोते हैं। कुकर्म we are not supposed to do। इसलिए कुकर्म का नाम नहीं लिया जा रहा। सत्कर्मों का बीज बोते हैं उसे खाद मिलती है, वर्षा बरसती है जल मिलता है या और किसी साधन से सिंचाई होती है। उस बीज में अंकुर प्रकट होते हैं। वह बीज अंकुरित होते हैं। थोड़े–थोड़े अभी ज़मीन से निकले हैं पौधे। एक समझदार किसान बड़ी निगरानी रखता है। कहीं इन पौधों के साथ–साथ अनावश्यक घास तो नहीं उग आया? उगता ही है। उनका बीज नहीं बोआ गया। बीज तो किसी खास चीज़ का ही बोआ गया है। जैसे आपको गेहूं चाहिए तो गेहूँ का बीज आपने बोआ है तो उसमें से गेहूँ के पौधे निकलेंगे लेकिन उसके साथ unwanted घास भी उगती है। उसका बीज नहीं बोआ गया है वह उगता है लेकिन समझदार किसान थोड़ी–थोड़ी देर के बाद जैसे ही अनावश्यक घास निकलता है उसे निकालता है। जड़ से उखाड़ देता है। उसके लिए

उसे कोई खुरपी आदि की आवयकता नहीं। उसे खींचता है तो उसे जड़ से ही निकलना चाहिए। निकाल लेता है तो सारी की सारी जो उसकी खुराक है, वह सारी की सारी उस पौधे को मिलती है। उपज बहुत बढ़िया होती है। यदि घास को वह नहीं निकालता तो उपज जो है वह बौनी रह जाती है, उगती ही नहीं या बौनी रह जाती हैं। मानो पूरा लाभ नहीं मिल रहा।

कबीर साहिब ने कहा एक साधक भी राम नाम का बीज बोता है। खेती तैयार होती है। प्रशंसा की वर्षा होती है तो अभिमान का घास उगता है। कैसी सुन्दर बात संत–महात्मा समझाते हैं। सत्कर्मों का बीज जब हम बोते हैं अंकुरित होगा उपज होगी पर जैसे ही प्रशंसा की वर्षा होती है। जैसे ही वाह वाह होती है अभिमान रुपी घास भी उगता है। यदि साधक यहाँ पर सावधान नहीं है उस घास को काटता नहीं या कटवाता नहीं तो सारी की सारी जो कमाई (उसकी खुराक है) वह अभिमान खा जाएगा। ■

निर्वाण दिवस

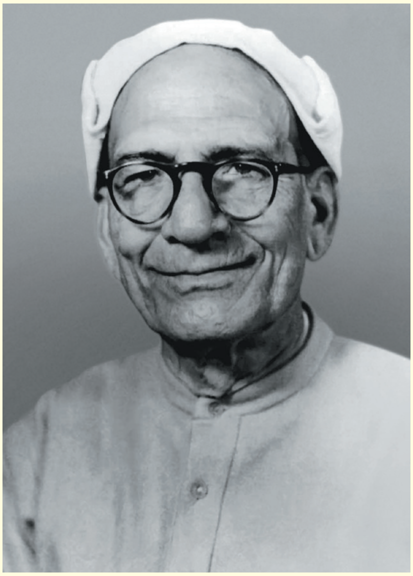

13 नवम्बर 1960

तिलक दिवस

9 दिसम्बर 1993

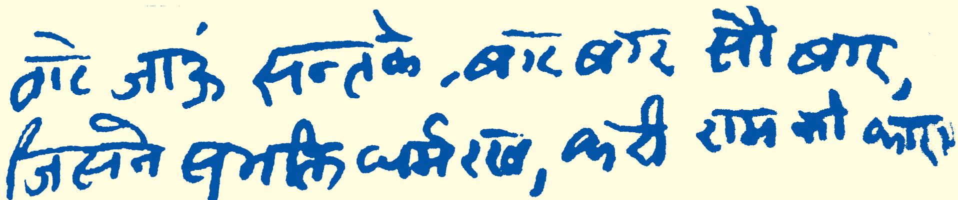

(पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज की डॉयरी से)

माला (जपनी)

पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज ने माला के सम्बन्ध में स्पष्ट और सटीक विचार प्रवचन पीयूष (पृ. 151) में प्रकट किए हैं। हमारे सत्संग में ऊन से बनी माला का प्रयोग किया जाता है। धार्मिक जगत में चन्दन, तुलसी, रुद्राक्ष की माला का प्रयोग होता है। ऊन की माला शुद्ध मानी गई है। वह हल्की है इस कारण साथ रखने में सरल है। यह किसी भी रंग की हो सकती है।

साधरणतया सत्संग में 108 मनके की माला का प्रयोग किया जाता है, 27 मनके की सिमरनी, 500 मनके की माला एवं 1000 मनके की माला का भी साधक प्रयोग करते हैं।

नाम दीक्षा के अवसर पर पूज्य श्री महाराज जी द्वारा साधक को माला दी जाती है, जिस पर साधक राम–नाम का जाप करते हैं। माला जप में बड़ी सहायक है, इसे भावपूर्वक फेरना चाहिए जिससे जाप में एकाग्रता बढ़ती है एवं जाप में बड़ा मन लगता है।

कर में माला फेरिए, जीभ फिरे मुख बीच।
आत्मा फिर सब अंग में, अमृत से दे सींच।।

साधकजनों के लिए माला बड़ा अवलम्बन है। पूज्य स्वामी जी का कथन है कि माला से प्रतिदिन दस–बारह हज़ार राम–नाम का जाप साधक को अवश्य करना चाहिए। पाँच मिनिट में एक हज़ार नाम–जाप की संख्या होनी चाहिए। माला जाप की संख्या गिनने में सहायक है। पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने इस माला को फेरने के लिए बड़ा ही सरल ढंग बताया है। अधिकांशतः साधक दाहिने हाथ से माला फेरते हैं। बाएं हाथ से भी माला फेरी जा सकती है, माला किसी भी उंगली से फेरी जा सकती है तथा माला के सुमेरु को भी लांघ सकते हैं। इसमें कोई दोष नहीं है। माला एक औषधि भी है जिससे हस्त–लाघव पैदा होता है। साधक की उंगलियाँ माला के ऊपर नृत्य करने से उंगलियों में विद्युत शक्ति पैदा हो जाती है। माला संकट–हारिणी, पाप–नाशिनी और सुख–दायनी है, यह असुरों से भी रक्षा करती है।

माला को बड़े आदर से पवित्र स्थान पर सुरक्षित रखना चाहिए। यह ध्यान हो कि माला फेरते समय धरती को स्पर्श न करे। माला जेब में रख सकते हैं या हाथ में या गले में भी पहन सकते हैं। माला फेरने में संकोच या लज्जा नहीं आनी चाहिए। जब हम सिनेमा आदि देखने में लज्जा नहीं करते तो माला फेरने में लज्जा क्यों करें केवल प्रदर्शन का भाव नहीं होना चाहिए।

पूज्य श्री स्वामी जी का कथन है,''जप–जपनी हरि नाम की'' माला पर जाप करना नहीं छोड़ना चाहिए। साधकों को इसे अपने जीवन का एक परम आवश्यक अंग बना लेना चाहिए। स्वामी जी अपनी बड़ी आयु में भी प्रतिदिन माला पर जाप किया करते थे। जबकि उन्हें माला फेरने की आवश्यकता नहीं थी, उन्होंने सब के लिए यह आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है।

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माहीं।
मनुआ तो चहुं दिश फिरे, यह तो सिमरन नाहीं।।
माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर।
करका मनका ड़ार दे, मन का मनका फेर।।

(कबीर साहिब)

माला से राम–नाम का जाप भाव से, प्रेम से व एकाग्रता से करना चाहिए जिससे नाम का संस्कार अन्दर बस जाता है और निरन्तर जाप करते रहने की स्थिति प्राप्त हो जाती है, मनोवृत्तियाँ शुद्ध हो जाती हैं, ऐसा जाप ध्यान में पूर्ण सहायक होता है।

(एक वरिष्ठ साधक)

प्रथम दर्शन

('प्रथम दर्शन' श्रृंखला के अन्तर्गत)

बाल्यकाल से ही मेरी रूचि धार्मिक कृत्यों के करने में रही है। समय–समय पर परिवार में होने वाली धार्मिक पूजा आदि के कार्यों में मैं भाग लेता रहा हूँ। परिवार एवं समाज में परमेश्वर की सगुण–साकार उपासना प्रचलित रही है। इसमें सभी देवी–देवताओं की पूजा की जाती है। रामायण, गीता आदि सद्ग्रंथों के धार्मिक प्रवचन सुनने में मेरी रूचि रही है। शनैः शनैः सत्संग के प्रति मेरी रूचि बढ़ती गई। इस प्रकार मेरे मन में अध्यात्म की ओर बढ़ने की जिज्ञासा प्रगट हुई।

"देव दया जब होनी चाहे,
सहज से सब सुयोग बनाये।
संत सुघड़ जिसको मिल जाते,
पुण्य उदय उसके हो आते।।"

परमात्म–कृपा से मुझे मेरे एक मित्र से ज्ञात हुआ कि प्रतिवर्ष दीपावली पर एक सुघड़ संत मुरार (ग्वालियर) में श्री देवेन्द्र सिंह जी बेरी के निवास पर पधारते हैं। ये मित्र उन संत से प्रभावित होकर दीक्षित हो गये थे। संत जी का कार्यक्रम ज्ञात कर वे मुझे संत–दर्शन हेतु नवम्बर मास, 1952 में श्री बेरी जी के निवास पर ले गये। श्री बेरी जी से वार्तालाप होने पर ज्ञात हुआ कि श्री स्वामी जी महाराज एक उच्चकोटि के आध्यात्मिक संत हैं। आप आध्यात्मिक भक्ति के धनी हैं। आपका आध्यात्मिक पथ–प्रदर्शन सरलतम, श्रेष्ठतम एवं मधुरतम है। उनके दर्शन मात्र से ही आप धन्य हो जायेंगे। यह सब सुनकर मैं अत्यन्त प्रभावित होकर दीक्षा लेने के लिए उद्यत हो गया। फिर मैंने दीक्षा ग्रहण करने हेतु श्री स्वामी जी के कक्ष में प्रवेश किया।

वहाँ विराजमान एक दिव्यमूर्ति, उन्नत ललाट, गौरवर्ण, तेजोमय मुख–मण्डल तथा नेत्रों में मंद–मंद मुस्कान जैसे किसी ध्यान में तल्लीन मेरी ओर देख रहे थे। ऐसे अद्भुत संत के दर्शन पाकर मैं धन्य हो गया। उन्हें सादर प्रणाम कर उनके समक्ष बैठ गया। उस समय एक और सज्जन, जो हिन्दी के व्याख्याता थे, दीक्षा लेने हेतु आकर बैठ गए।

श्री स्वामी जी ने पूछा कि आप कैसे आये ? सविनय हमने बताया कि नाम लेने आये हैं। तत्पश्चात् श्री स्वामी जी ने हमसे वचन लिया– मैं जो कहूँगा करते रहोगे, छोड़ोगे तो नहीं हमारे हाँ कहने पर स्वामी जी ने हमें दीक्षा–विधि (ध्यान करने की प्रक्रिया) समझायी और नाम देना प्रारम्भ किया ''करो झुककर प्रणाम परमात्मा को। सुखासन में सीधे बैठकर नेत्र बंद कर भृकुटी के मध्य (आज्ञा–चक्र पर) दृष्टि एवं वृत्ति केन्द्रित करें। मन ही मन राम–राम जपते हुए आज्ञा–चक्र पर मन को एकाग्र करें। मन में राम–राम जपते समय होंठ व जीभ न हिले। आप ध्यान में बैठे रहें। जब मैं कहूँ तब आँखें खोलना।'' फिर श्री स्वामी जी ने उच्च स्वर में राम–राम शब्द का उच्चारण किया। इस प्रकार आपने अपनी आत्मशक्ति से हमारे अन्तःकरण में अध्यात्म शक्ति का संचार किया और हमारे घट–मंदिर में राम–नाम एक जाग्रत, चैतन्य मंत्र की स्थापना कर प्रसुप्त कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत किया। थोड़ी देर ध्यान करते रहने के पश्चात् आपने कहा,''आँखें खोलो और पूछा नाम जपते रहे? कुछ अनुभव हुआ?'' मैंने हाथ जोड़कर बताया ''मैं नाम जपता रहा।'' साथ में बैठे सज्जन ने बताया कि मुझे ध्यान में सूर्य के दर्शन हुए और ऐसा प्रतीत हुआ कि उसमें कोई 'राम' शब्द लिख रहा है। 'रा' लिखकर 'म' लिखने को हुआ कि आपने कहा, आँखें खोलो। यह सुनकर स्वामी जी बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि first meeting में ही आप पर राम–कृपा हुई। आप आगे भी निभाते रहिए। यह हुआ विधिपूर्वक ध्यान। फिर आपने समझाया कि चलते–फिरते, सोते–जागते, काम–काज करते हुए या बैठकर राम–नाम का जाप करते रहें। जाप माला से अथवा बिना माला के मन ही मन में या बैखरी वाणी से कर सकते हैं। मानसिक जाप उत्तम माना गया है। यह हुआ विधिपूर्वक जाप।

इस प्रकार नित्य नियम से विधिपूर्वक ध्यान व जाप करते रहें। फिर श्री स्वामी जी को प्रणाम कर, आशीर्वाद लेकर हम कक्ष से बाहर आ गये।

घर आते ही मुझे गुरु–कृपा का भान हुआ और मन, वचन, कर्म से गुरु के प्रति मुझमें समर्पण भाव जागृत हो गया। जीवन में अनन्य भक्ति एवं निष्काम भक्ति आ गयी। पूर्व के सभी धार्मिक कृत्य अनायास ही छूट गये। छोड़ने नहीं पड़े।

"एक देव की टेक है, सुदृढ़ निश्चय एक।

अनन्य सुभक्ति राम में, है तज देव अनेक।।"

इस प्रकार सद्गुरु से प्रथम मिलन का यह अपूर्व अनुभव का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रथम मिलन के उस शुभ दिन को मैं कभी नहीं भूल सकता, जिस दिन सुघड़ संत श्री स्वामी जी ने अहैतुकी कृपा कर मुझे अपना शिष्य स्वीकार कर, अपनी शरण में ले लिया और सगुण निराकार परमात्मा की उपासना–पद्धति देकर धार्मिकता से अध्यात्म की ओर मोड़ दिया, मैं मनमुखी से गुरुमुख हो गया। तब से आज तक (67 वर्ष) दृढ़तापूर्वक गुरु–आज्ञा का पालन करते हुए राम–कृपा बनी हई है।

(एक वरिष्ठ साधक)

श्रीरामशरणम् : नई दिल्ली का भव्य उद्घाटन

(श्रीरामशरणम् के एक ऐतिहासिक विवरण की श्रृंखला के अन्तर्गत)

समय समय पर परम पूजनीय स्वामी जी के प्रेमी साधकों ने उनसे साधना केन्द्र स्थापित करने की प्रार्थना की। कुछ प्रेमियों ने साधना भवन के लिए शुभ दान देने का संकल्प भी प्रकट किया। किन्तु स्वामी जी महाराज को साधना के लिए आए हुए अपने अनुगत जनों का इस प्रकार चन्दा देना पसन्द न आया, अतः वह संकल्प पूरे न हो सके। फिर भी साधना केन्द्र स्थापित करने की भावना प्रेमियों के मन में बनी ही रही। स्वर्गीय राय बहादुर श्री जोधामल जी ने हरिद्वार में श्रीरामशरणम् बनवा कर स्वामी जी महाराज के श्री चरणों में अर्पण कर दिया।* (सत्य साहित्य जुलाई 2019)

किन्तु केन्द्रीय साधना केन्द्र की आवश्यकता बनी ही रही। ''ऐसे साधना केन्द्र की दिल्ली में स्थापना होती तो पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और दिल्ली इत्यादि प्रांतों के साधकों को सम्मिलित साधनाओं के लिए विशेष सुविधा मिलती'' यह विचार भक्तों के मन में उठते ही रहे। एक दिन साहस करके स्वामी जी महाराज से केन्द्रीय साधना केन्द्र की आवश्यकता के विषय में पुनः प्रार्थना की। स्वामी जी ने प्रार्थना स्वीकार

कर ली और साधना केन्द्र की रुपरेखा भी दी।

स्वामी जी की रुपरेखा के अनुसार कार्य आरम्भ हुआ। हरिद्वार श्रीरामशरणम् के अनुरुप ही सत्संग हॉल में श्री अधिष्ठान जी की स्थापना के साथ दाईं ओर पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के चित्र की स्थापना भी की गई एवं स्थित प्रज्ञ के लक्षण, भक्ति एवं भक्त के लक्षण, धुनें अंकित की गईं। सत्संग हॉल के मुख्य द्वार पर ''श्रीरामशरणम्'', प्रवेश द्वार पर ''श्रीरामशरणम् गच्छामि'' एवं श्री अधिष्ठान जी के ऊपरी भाग पर ''श्री रामशरणम् वयं प्रपन्नाः'' अंकित किया गया। ''श्रीरामशरणम्'' भवन के Beam पर 'श्री अमृतवाणी' अंकित की गई। अखण्ड जाप के कमरे में श्री अधिष्ठान जी के ऊपरी भाग पर 'श्रीरामशरणम् अहम् प्रपद्ये' अंकित किया गया। इस प्रकार श्री स्वामी जी महाराज के निर्देशानुसार स्वच्छ, सुन्दर व सुसज्जित दिल्ली श्रीरामशरणम् भवन निर्मित हुआ। सत्संग हॉल के निर्माण के साथ–साथ कुछ कमरों का भी निर्माण कराया गया। इसमें एक कक्ष अखण्ड जाप के लिए एवं एक कक्ष पूज्य श्री महाराज जी के निवास के लिए नियत हुआ।

श्रीरामशरणम् नई दिल्ली के शुभ प्रवेश के लिए 13 अप्रैल 1962, (तदानुसार विक्रमी सम्वत् 2019 चैत्र मास, शुक्ल पक्ष तिथि रामनवमी, दिन शुक्रवार बैसाखी पर्व) की तिथि नियत की गई।

शुभ मुहूर्त के उपलक्ष्य में 5 अप्रैल 1962 से 13 अप्रैल 1962 तक एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें 5 अपैल 1962 को प्रातःकाल श्री बाल्मीकीय रामायण सार का पाठ बड़े मधुर स्वर और चाव भाव के साथ नवाह्न परायण की विधि से प्रारम्भ किया। प्रति दिन प्रातः काल 7:30 बजे से 9 बजे तथा सायंकाल 5:30 बजे से 7 बजे तक श्री रामायण पाठ के इस कार्यक्रम में सैंकड़ों साधकों ने भाग लिया। इसके साथ ही ऊपर के कमरे में नाम जाप का कार्यक्रम भी चलता रहा। एक करोड़ से भी अधिक नाम जाप का अनुष्ठान हुआ। चैत्र नव–रात्री के उपलक्ष्य में श्री दुर्गा सप्तशती के दस पाठ किए।

13 अप्रैल 1962 के प्रातःकाल 9 बजे के बाद पूजनीय प्रेम जी महाराज ने सभी साधकों के साथ 'श्री रामशरणम' में कलश के साथ प्रवेश करके मुहूर्त की विधि को सम्पन्न किया।

प्रवेश मुहूर्त की विधि के बाद लाला भगवानदास कत्याल ने पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का स्वागत करते हुए नम्र निवेदन में यह कहा,'' स्वामी जी के निर्देशानुसार इस सुन्दर साधना केन्द्र को मूर्तरुप में देख रहे हैं और स्वामी जी महाराज के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के अनुगामी हो कर इस भवन में प्रवेश करने की शुभ मुहूर्त विधि को सम्पन्न कर रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट हमारी इस पवित्र भेंट को स्वीकार करेगा तथा श्रीरामशरणम् के मूलभूत उदेश्यों को ध्यान में रखते हुए इस का यथावत् संचालन करेगा।

'श्रीरामशरणम्' यह नाम चुनते समय स्वामी जी ने कितनी भावुकता का परिचय दिया है, इसके दो अर्थ हैं श्री राम जी का घर और श्री राम जी जहाँ शरण हैं, रक्षक हैं। इस प्रकार 'श्रीरामशरणम्' हमें धीरज देता है, श्री राम की शरण सुलभ है। हममें से प्रत्येक साधक इस के द्वार पर आकर 'श्रीरामशरणम् गच्छामि' मैं श्री राम की शरण में जाता हूँ यह अनुभव करता है। और हम सब अन्दर जाकर 'श्रीरामशरणम् वयं प्रपन्नाः' 'हम श्री राम की शरण में पहुँच गए हैं', यह धारणा प्राप्त करते हैं। श्री अधिष्ठान जी के दर्शन से हमें अपने लक्ष्य का ध्यान आता है। उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जिन लक्षणों की आवश्यकता है वह लक्षण भी 'भक्ति और भक्त के लक्षण' तथ 'स्थितप्रज्ञ के लक्षण' यहाँ शिलालेखों के रुप में हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं। फिर प्रवेश की अवस्था में पूज्यपाद स्वामी जी के श्री मुख से स्वयं स्फुरित हुई कीर्तन ध्वनियाँ भी यहाँ अंकित हैं।

मैं प्रभु श्री राम जी, पूज्यपाद गुरुदेव महाराज तथा आदरणीय श्री प्रेमनाथ जी महाराज का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ, जिनकी कृपा और प्रेम से ये सम्पूर्ण कार्यक्रम निर्विघ्न सम्पन्न हुआ है।

तत्पश्चात् पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज ने आशीर्वाद और उपदेश दिया। आशीर्वाद के बाद भगवन्नाम संकीर्तन का मनोहर कार्यक्रम प्रायः 12 बजे तक चलता रहा। इसमें सभी साधकों ने बड़े भाव चाव से भाग लिया। कीर्तन के अनन्तर प्रसाद वितरण और प्रीतिभोज हुआ जिसमें हज़ारों प्रेमियों ने श्रद्धा भक्ति के साथ प्रसाद पाया।

(सत्य साहित्य मई 1962) ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

(जून से सितम्बर 2019)

साधना सत्संग, खुले सत्संग, उद्घाटन एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **मनाली,** हिमाचल प्रदेश में 14 से 16 जून तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 54 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **किश्तवाड़,** जम्मू एवं कश्मीर में 22 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 27 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गाठा,** भदरवाह जम्मू एवं कश्मीर में 23 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 45 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रामगढ़,** चंदोली, उत्तरप्रदेश में 23 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 175 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **शुक्रताल,** उत्तरप्रदेश, में 29 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 43 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सैलर्सबर्ग,** अमेरिका में 27 से 30 जून तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 30 जून को 18 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 30 जून से 3 जुलाई तक परम पूजनीय महाराज जी के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।
- **कोलकता,** पश्चिमी बंगाल 7 जुलाई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 49 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 11 से 16 जुलाई तक गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।
- **दिल्ली** में 27 से 29 जुलाई तक परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **रोहतक,** हरियाणा में 10 से 11 अगस्त तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **हीरानगर,** जम्मू एवं कश्मीर में 18 अगस्त को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 179 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रतनगढ़,** राजस्थान में 31 अगस्त से 1 सितम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 396 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **चण्डीगढ़** में 1 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 88 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रोपड़,** पंजाब में 1 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 41 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रेवाड़ी,** हरियाणा में 7 से 8 सितम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 8 सितम्बर को 28 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जालन्धर,** पंजाब में 8 सितम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम के पश्चात् 106 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हिसार,** हरियाणा, में 14 से 15 सितम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 15 सितम्बर को 19 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गुरदासपुर,** पंजाब में 20 से 22 सितम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हो रहा है जिसमें 22 सितम्बर को नाम दीक्षा होगी।
- **सिडनी,** आस्ट्रेलिया में 28 से 29 सितम्बर तक खुले सत्संग का आयोजन हो रहा है जिसमें 29 सितम्बर को नाम दीक्षा होगी।
- **हरिद्वार** में 29 सितम्बर से 8 अक्टूबर तक रामायणी सत्संग लग रहा है।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में जुलाई एवं अगस्त में 128 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणरम् की प्रगति

- **कादियाँ,** पंजाब में श्रीरामशरणरम् का निर्माण लगभग पूर्ण हो गया है। 5 नवम्बर मंगलवार को श्रीरामशरणरम् भवन का उद्घाटन होना निश्चित हुआ है।
- **धारीवाल,** पंजाब में श्रीरामशरणरम् भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है।
- **अमरपाटन,** मध्यप्रदेश में श्रीरामशरणरम् भवन का निर्माण कार्य तेज़ी से चल रहा है।

Sadhna Satsang (October 2019 to December 2020)		
Haridwar (Ramayani)	29 Sept. to 8 October 2019	Sunday to Tuesday
Haridwar	11 to 14 November 2019	Monday to Thursday
Gwalior	22 - 25 November 2019	Friday to Monday
Indore	10 to 13 January 2020	Friday to Monday
Hansi	7 to 10 February 2020	Friday to Monday
Haridwar	13 to 16 March	Friday to Monday
Haridwar	4 to 9 April	Saturday to Thursday
Haridwar	30 June to 5 July	Tuesday to Sunday
Haridwar (Ramayani)	16 to 25 October	Friday to Sunday
Haridwar	11 to 14 November	Wednesday to Saturday
Gwalior	27 to 30 November	Friday to Monday

Open Satsang (October 2019 to March 2020)		
Jammu	11 to 13 Oct	Friday to Sunday
Alampur	20 Oct	Sunday
Pathankot	2 to 3 Nov	Saturday & Sunday
Amritsar	10 Nov	Sunday
Kathua	17 Nov	Sunday
Fazalpur	30 Nov to 1 Dec	Saturday & Sunday
Bhiwani	7 to 8 Dec	Saturday & Sunday
Sujanpur	13 to 15 Dec	Friday to Sunday
Surat	21 - 22 Dec	Saturday & Sunday
Hoshiarpur	29 Dec	Sunday
Jhabua	5 to 7 Jan	Sunday to Tuesday
Bilaspur	21 to 23 Feb	Friday to Sunday
Delhi (Holi)	8 to 10 Mar	Sunday to Tuesday
Jhabua (Maun Sadhna)	24 Mar to 2 Apr	Tuesday to Thursday

Poornima (October 2019 to March 2020)	
13 October	Sunday
12 November	Tuesday
12 December	Thursday
10 January	Friday
9 February	Sunday
9 March	Monday

Deeksha in Shree Ram Sharnam Delhi (October 2019 to March 2020)		
20 October	Sunday	10.30 AM
17 November	Sunday	11.00 AM
22 December	Sunday	11.00 AM
19 January	Sunday	11.00 AM
16 February	Sunday	11.00 AM
22 March	Sunday	11.00 AM

Naam Deeksha in Other Centres (October 2019 to March 2020)		
13-Oct	Sunday	Jammu, J&K
20-Oct	Sunday	Alampur, HP
03-Nov	Sunday	Pathankot, Punjab
05-Nov	Tuesday	Qadian, Punjab
10-Nov	Sunday	Amritsar, Punjab
17-Nov	Sunday	Kathua, J&K
22, 23, 24 Nov	Fri, Sat, Sunday	Gwalior, MP
01-Dec	Sunday	Fazalpur, Kapurthala, Punjab
08-Dec	Sunday	Bhiwani , Haryana
08-Dec	Sunday	Ujjain, MP
09-Dec	Monday	Hoshangabad, MP
15-Dec	Sunday	Sujanpur, Punjab
16-Dec	Monday	Baag, Distt Dhar, MP
17-Dec	Tuesday	Bolasa, Jhabua, MP
18-Dec	Wednesday	Kalyanpura,Jhabua, MP
22-Dec	Sunday	Surat, Gujrat
29-Dec	Sunday	Hoshiarpur, Punjab
02-Jan	Thurdasy	Kushalgarh, Rajasthan
03-Jan	Friday	Kupda, Banswara, Rajasthan
04-Jan	Saturday	Dahod, Gujrat
05-Jan	Sunday	Jhabua, MP
12-Jan	Sunday	Indore, MP
16 Feb	Sunday	Patiala, Punjab
23-Feb	Sunday	Bilaspur, HP

Janamashtami

It was the day of Janamashtami. Diya and her friends were sitting in their classroom with their teacher Reena. Reena ma'am asked "Do you know what is being celebrated today?" All the children said, "It's Krishna's birthday." Diya asked, "How old is he today?" Arav said, "He's 6 years old", because he himself was going to be 6 soon. Samar said, "No, he's 5 years old". Vani said, "No he's 2 years old today" because she had just seen a picture of baby Krishna eating makhan.Their friend Isha was confused and asked, "How can Krishna be of so many different ages today?"

Reena ma'am asked everyone to sit quietly and told them a story –

On a full moon night in the forest of Vrindavan, Krishna started playing his flute. All the gopis, Krishna's friends, heard the flute and ran to the forest pulled by Divine music. As they reached the forest, Krishna hid himself and no one could find him.

The gopis became sorrowful and looked for their Kanha everywhere. They asked the animals if they had seen Kanha. They asked the trees and the river if they had seen their beloved. Even though they could not find him, they did not give up.

Krishna saw their devotion and finally appeared before them. The gopis were elated. Krishna started playing his flute and they all wanted to dance with him. Krishna did not want to disappoint his devoted gopis so he multiplied himself into many and danced with the gopis.

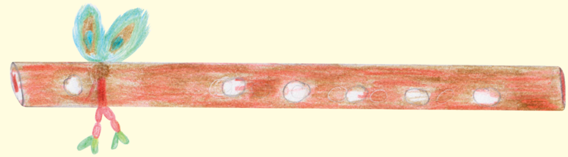

Each Gopi was able to dance with her own Kanha.

So there are many Krishnas and he comes to anyone who looks for him with love and devotion like the gopis.

Reena ma'am asked all of them to close their eyes and call out to their own Krishna to ask how old he turned today.

अतिशय विनम्र अनुरोध

2 अक्टूबर 2020 परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के अवतरण दिवस का शताब्दी वर्ष होगा। इसके उपलक्ष्य में 'सत्य साहित्य' का एक विशेष अंक प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा। आप सभी से अनुरोध है कि यदि आपके पास प्रेम जी महाराज का कोई चित्र, पत्र/ संबंधित सामग्री एवं अनुभूतियाँ हैं तो कृपया आप श्रीरामशरणम्, 8ए, रिंग रोड लाजपत नगर–4 नई दिल्ली – 110024 के पते पर भेज सकते हैं या shreeramsharnam@hotmail.com पर ईमेल कर सकते हैं। (आप परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के पत्रों और फोटो की कॉपी भेज सकते हैं।

Credits: Illustration on Pages 3, 4, 10 & 16 are drawn from childrens' cards made for this issue of Satya Sahitya.

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्यौगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924